सौंफ

सौंफ मसाले की एक प्रमुख फसल है। इसका उपयोग औषधि के रुप में भी किया जाता है। भारतवर्ष में सौंफ की खेती मुख्यतः राजस्थान, गुजरात तथा उत्तरप्रदेश में होती है।

उन्नत किस्में –

आर.एफ. 125 (2006) – इस किस्म के पौधे कम ऊंचाई के होते हैं। जिसका पुष्पक्रम संधन तथा लम्बे सुड़ौल एवं आकर्षक दानों युक्त होता है यह किस्म शीघ्र पकने वाली है इसकी औसत उपज 17 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर है।

आर.एफ. 143 (2007) – इस किस्म के पौधे सीधे एवं ऊँचाई 116–118 सेमी होती है। जिस पर 7–8 शाखाएं निकली हुई होती है। इसका पुष्पक्रम संधन होता है तथा प्रति पौधा अम्बल की संख्या 23–62 होती है। यह किस्म 140–150 दिनों में पककर तैयार हो जाती है इसकी औसत उपज 18 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर है। इसमें वाष्पशील तेल अधिक (1.87 प्रतिशत) होता है।

आर.एफ. 101 (2005) – यह किस्म दोमट एवं काली कपास वाली भूमियों के लिये उपयुक्त है। यह 150–160 दिन में पक जाती है। पौधे सीधे व मध्यम ऊंचाई वाले होते हैं। इसकी औसत उपज क्षमता 15–18 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर है। इसमें वाष्पशील तेल की मात्रा भी अधिक (1.2 प्रतिशत) होती है। इस किस्म में रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता अधिक तथा तेला कीट कम लगता है।

जलवायु – यह शरद ऋतु में बोयी जाने वाली फसल है। लेकिन सौंफ फूल आने के समय पाले से प्रभावित होती है, इसलिए इसका विशेष ध्यान रखना चाहिये। शुष्क एवं सामान्य ठण्डा मौसम विशेषकर जनवरी से मार्च तक इसकी उपज व गुणवत्ता के लिये बहुत लाभदायक रहता है। फूल आते समय, लम्बे समय तक अधिक बादल या अधिक नमी से बीमारियों के प्रकोप को बढ़ावा मिलता है।

भूमि एवं खेत की तैयारी – सौंफ की खेती बलुई मिट्टी को छोड़कर प्रायः सभी प्रकार की भूमि में, जिसमें जीवांश पर्याप्त मात्रा में हो, की जा सकती है। लेकिन अच्छी पैदावार के लिये जल निकास की पर्याप्त सुविधा वाली, चूनायुक्त, दोमट व काली मिट्टी उपयुक्त होती है। भारी एवं चिकनी मिट्टी की अपेक्षा दोमट मिट्टी अधिक अच्छी रहती है।

अच्छी तरह से जुताई करके 15 से 20 सेन्टीमीटर गहराई तक खेत की मिट्टी को जुताई करके भुर भुरी बना लेना चाहिये। खेत की तैयारी के समय पर्याप्त नमी न हो तो पलेवा देकर खेत की तैयारी करनी चाहिये। जुताई के बाद पाटा चलाकर खेत को समतल करके सिंचाई की सुविधानुसार क्यारियां बनानी चाहिये।

खाद व उर्वरक – फसल की अच्छी बढ़वार के लिये भूमि में पर्याप्त मात्रा में जैविक पदार्थ का होना आवश्यक है। यदि इसकी उपयुक्त मात्रा भूमि में न हो, तो 10 से 15 टन अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर खेत की तैयारी से पहले डाल देना चाहिये।

इसके अतिरिक्त 90 किलो नत्रजन एवं 40 किलो फास्फोरस प्रति हैक्टेयर की दर से देना चाहिये। 30 किलो नत्रजन एवं फास्फोरस की पूर्ण मात्रा खेत की अन्तिम जुताई के साथ ऊरकर देना चाहिये। शेष नत्रजन को दो भागों में बांट कर 30 किलो बुवाई के 45 दिन बाद एवं शेष 30 किलो नत्रजन फूल आने के समय फसल की सिंचाई के साथ देवें।

जैविक पोषक तत्व प्रबन्धन – सौंफ में जैविक पोषक तत्व प्रबन्धन के लिए शत–प्रतिशत सिफारिश की गई नत्रजन की मात्रा गोबर की खाद द्वारा तथा साथ में जैव उर्वरक (एजेटोबेक्टर व फास्फोरस विलयकारी जीवाणु 5 कि.ग्राम प्रति हेक्टेयर), 250 कि.ग्राम जिप्सम, 250 कि.ग्राम तुम्बा की खली व सिफारिश की गई नत्रजन की 50 प्रतिशत मात्रा फसल अवशेष प्रति हेक्टेयर व फसल बचाव के लिए नीमआधारित उत्पाद एन्टोमोफेगस फफूंद अथवा बायोपेस्टीसाइड अथवा वानस्पतिक उत्पाद अथवा गौशाला उत्पाद एवं प्रीडेटर का उपयोग किया जा सकता है।

बीज की मात्रा एवं बुवाई – सौंफ के लिये 8–10 किलोग्राम स्वस्थ बीज प्रति हैक्टेयर बुवाई हेतु पर्याप्त होता है। बुवाई अधिकतर छिटकवां विधि से की जाती है तथा निर्धारित बीज की मात्रा, एक समान छिटक कर हल्की दंताली चलाकर या हाथ से मिट्टी में मिला देते हैं। लेकिन सौंफ की बुवाई रोपण विधि द्वारा या सीधे कतारों में भी की जाती है। सीधी बुवाई के लिये 8–10 किलो बीज एवं रोपण विधि में 3–4 किलो बीज की प्रति हैक्टेयर आवश्यकता होती है। रोपण विधि से बुवाई के लिये जुलाई – अगस्त में 100 वर्ग मीटर क्षेत्र में पौध शैया लगाई जाती है तथा सितम्बर में रोपण किया जाता है। इसकी बुवाई मध्य सितम्बर से मध्य अक्टूबर तक की जाती है। बुवाई 40–50 सेन्टीमीटर के फासले पर कतारों में हल के पीछे कूड़ में 2–3 सेन्टीमीटर की गहराई पर करें। पौध को, पौधशाला में सावधानी पूर्वक उठायें, जिससे जड़ों को नुकसान नहीं हो। रोपण दोपहर बाद गर्मी कम होने पर करें तथा रोपण के बाद तुरन्त सिंचाई करें। सीधी बुवाई में, बुवाई के 7–8 दिन बाद दूसरी हल्की सिंचाई करें, जिससे अंकुरण पूर्ण हो जाये।

बीजोपचार एवं बुवाई का समय – बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेण्डेजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोयें। इसकी बुवाई का उपयुक्त समय मध्य सितम्बर है।

सिंचाई – सौंफ को अधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है। बुवाई के समय खेत में नमी कम हो तो बुवाई के तीन चार दिन बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिये, जिससे बीज जम जाये। सिंचाई करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि पानी का बहाव तेज न हो अन्यथा बीज बह कर किनारों पर इकट्ठे हो जायेंगे। दूसरी सिंचाई बुवाई के 12–15 दिन बाद करनी चाहिये, जिससे बीजों का अंकुरण पूर्ण हो जाये। इसके बाद सर्दियों में 15–20 दिन के अन्तर पर सिंचाई करनी चाहिये। फूल आने के बाद फसल को पानी की कमी नहीं होनी चाहिये।

निराई – गुड़ाई – सौंफ के पौधे जब 8–10 सेन्टीमीटर के हो जायें तब गुड़ाई करके खरपतवार निकाल दें। गुड़ाई करते समय जहां पौधे अधिक हों, वहां से कमजोर पौधों को निकालकर पौधे से पौधे की दूरी 20 सेन्टीमीटर कर दें जिससे बढ़वार अच्छी हो। इसके बाद समय–समय पर आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहें। फूल आने के समय पौधों पर हल्की मिट्टी चढ़ा देवें जिससे कि तेज हवा से पौधे नहीं गिरे। सौंफ में एक किलो पेन्डीमिथेलिन सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर 750 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 1 से 2 दिन बाद छिड़काव करके भी खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।

प्रमुख कीट एवं व्याधियां –

मोयला, पर्णजीवी (थ्रिप्स) एवं मकड़ी (बरुथी) – मोयला पौधे के कोमल भाग से रस चूसता है तथा फसल को काफी नुकसान पहुंचाता है। थ्रिप्स कीट बहुत छोटे आकार का होता है तथा कोमल एवं नई पत्तियों से हरा पदार्थ खुरचकर खाता है जिससे पत्तियों पर धब्बे दिखाई देने लगते हैं तथा पत्ते पीले होकर सूख जाते हैं। मकड़ी छोटे आकार का कीट है जो पत्तियों पर घूमता रहता है व रस चूसता है जिससे पौधा पीला पड़ जाता है।

नियंत्रण हेतु डाईमिथोएट 30 ई सी या मैलाथियॉन 50 ई सी एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी या एसीटामाप्रिड 20 प्रतिशत एसपी का 100 ग्राम प्रति हेक्टर के हिसाब से घोल बनाकर छिड़कना चाहिये। यदि आवश्यक हो तो यह छिड़काव 15–20 दिन बाद दोहरायें।

छाछ्या (पाउडरी मिल्ड्यू) – रोग के लगने पर शुरू में पत्तियों एवं टहनियों पर सफेद चूर्ण दिखाई देता है जो बाद में पूर्ण पौधे पर फैल जाता है। नियंत्रण हेतु 20–25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर गंधक के चूर्ण का भुरकाव करना चाहिये या डाइनोकेप एल सी 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कना चाहिये। आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव दोहरायें।

जड़ व तना गलन – रोग के प्रकोप से तना नीचे से मुलायम हो जाता है व जड़गल जाती है। जड़ों पर छोटे बड़े काले स्कलेरोशिया दिखाई देते हैं।

नियंत्रण हेतु बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेण्डेजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार कर बुवाई करनी चाहिये या कैप्टान 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से भूमि को उपचारित करना चाहिये।

कटाई – सौंफ के दाने गुच्छों में आते हैं। एक ही पौधे के सब गुच्छे एक साथ नहीं पकते हैं। अतः कटाई एक साथ नहीं हो सकती है। जैसे ही दानों का रंग हरे से पीला होने लगे गुच्छों को तोड़ लेना चाहिये। सौंफ की उत्तम पैदावार के लिये फसल को अधिक पककर पीला नहीं पड़ने देना चाहिये। सूखते समय बार–बार पलटते रहना चाहिये वरना फफूंद लगने की सम्भावना रहती है। उत्तम किस्म की चबाने (खाने) के रूप में काम आने वाली सौंफ पैदा करने के लिए, जब दानों का आकार पूर्ण विकसित दानों की तुलना में आधा होता है इस समय छत्रकों की कटाई कर साफ जगह पर छाया में फैलाकर सुखाना चाहिये। इस विधि से कटाई करने से सुप्रसिद्ध लखनऊ–1 किस्म की सौंफ प्राप्त होती है। बुवाई हेतु बीज प्राप्त करने के लिये मुख्य छत्रकों के दाने जब पूर्णतया पककर पीले पड़ने लगे तभी काटना चाहिये।

उपज – सौंफ को अच्छी तरह से खेती की जाये तो 10–15 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर तक पूर्ण विकसित एवं हरे दाने वाली सौंफ की उपज प्राप्त की जा सकती है। साधारणतया 5–7.5 क्विण्टल प्रति हैक्टेयर महीन किस्म की सौंफ आसानी से पैदा की जा सकती है।